संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ४२ ● १४ नवम्बर २०१७ अगहन कृष्ण पक्ष एकादशी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग बैठक सफलता पूर्वक सम्पन्न–

प्रदेश में पूर्ण शराब बन्दी तक आर्य समाज चलायेगा आन्दोलन

- **काशी शास्त्रार्थ के 150 वें वर्ष पर होगा वाराणसी में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन**
- **म0 नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में होगा शताब्दी आर्य महासम्मेलन सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष डॉ0 धीरज सिंह आर्य की अध्यक्षता में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय 12 नवम्बर 2017 रविवार को इटावा जिले की प्रसिद्ध तहसील जसवन्त नगर में।**

– डॉ0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

आर्य प्रतिनिधि की अन्तरंग बैठक (जसवन्त नगर इटावा) का आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश के कार्यकर्ता–अधिकारी, अंतरंग सदस्यों ने सैकड़ों की संख्या में भाग लिया इसका शुभारम्भ ईश प्रार्थना से किया गया सभा मन्त्री स्वामी जी ने संयोजन किया और गत कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया। उसके बाद प्रदेश में वेदप्रचार को गति देने एवं युवकों के चरित्र निर्माण हेतु आर्य वीरदल की शाखाओं के विस्तार एवं शिविर लगाने के लिए योजनायें तैयार की गई, प्रदेश की समाजों की एक रूपता एवं जागरूगता के लिए भी लागों ने सुझाव दिये तथा प्रत्येक जिले में जिला सभा द्वारा प्रत्येक समाज का निरीक्षण करना तथा प्रान्तीय सभा द्वारा प्रत्येक जिले में निरीक्षक की नियुक्ति किये जाने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास किया गया। जो जिले की प्रत्येक समाज का सत्यापन करके सभा को यथार्थ जानकारी प्राप्त करायेगें। प्रत्येक आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संग, वार्षिक सम्मेलन, आर्य पर्व पद्धति द्वारा जन जागरण के साथ–साथ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, महर्षि दयानन्द बोध पर्व, आर्य समाज में खाता पत्रिका, उपस्थिति सदस्यता पत्रिका, आय–व्यय का पूरा विवरण ही आर्य समाज की जीवन्तता को सिद्ध करेगा आर्य समाजों द्वारा युवा शक्ति को प्रोत्साहन शाखाओं एवं शिविरों द्वारा किया जायेगा तथा समय–समय पर वेद प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन करेगा जिला सभाओं को अपने जिले की आर्य समाजों के संगठन को प्रभावी करने की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देने का निर्णय लिया गया जो नई समाजों की प्रमाणिकता के साथ पुरानी समाजों के सहयोग हेतु जिले की प्रत्येक समाज को सक्रिय करने के लिए अपना योगदान प्रदान करेगी। वर्ष २०१६ में काशी शास्त्रार्थ को १५० वर्ष हो रहे हैं उस स्मृति को आर्य जगत् के लिए प्रेरणाप्रद एवं चिरस्मृति बनाने के लिए वराणसी में प्रदेश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जायेगा जिसकी रूपरेखा तैयार कर आर्य जनता को भविष्य में बताई जायेगी। महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल का शताब्दी वर्ष २०२० है मई मास में उसकी शताब्दी की योजना तैयार करने का निर्णय लिया गया तथा उसके संयोजन समिति के अध्यक्ष पद का उत्तरदायित्व श्री प्रमोद आर्य आगरा, को सर्वसम्मति से घोषित किया गया। शराब बन्दी आन्दोलन की रूपरेखा तैयार करना एवं प्रदेश में व्यापक प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यक्ष जी द्वारा श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी मुरादाबाद का नाम प्रस्तावित किया जिसे करतल ध्वनि से सभी ने स्वीकार किया उसकी प्रत्येक जिले में समितियाँ बनाकर प्रभावी किया जायेगा। आर्य सामज के प्रचार–प्रसार को प्रभावशाली बनाने के लिए वेद प्रचार विभाग को सक्रिय किये जाने का भी सर्वसम्मिति से निर्णय लिया गया जिसके लिए जिलास्तर पर सम्मेलन किये जायें और ग्राम–ग्राम में वेद प्रचार के लिए जिला सभाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो उसके लिए अपने स्तर से क्षेत्र में कार्यक्रमों का आयोजन करें जिसकी सूचना प्रान्तीय कार्यालय को समय–समय पर दी जायें। बैठक में ब्र० पूरन सिंह अलीगढ़,श्री रूद्रपाल सिंह बिजनौर, डॉ० सर्वेश आर्य औरैय्या ने सभी का स्वागत अभिनन्दन किया, श्री राजनाथ आगरा, श्री धर्मवीर जी बागपत, श्री प्रकाश नारायण शास्त्री वाराणसी, श्री यशपाल सिंह सुलतानपुर, श्री रमेश सिंह मु० बाद, श्री ज्ञानेन्द्र जी बदायूं, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य गा० बाद, श्री मुकेश आर्य दूधली, श्री बेचन सिंह आर्य मिर्जापुर, श्री विकास आर्य, पवन आर्य बिजनौर, जयप्रकाश भारती गाजीपुर, प्रताप सिंह, मु०

नगर, संजय तिवारी व बलरामपुर– राजा सिंह भदौरिया आदि–आदि लोगों ने अपनी आख्या प्रस्तुत की तथा वेद प्रचार को गति देने हेतु सुझाव दिये।

अन्त में सभा अध्यक्ष एवं का० प्रधान श्री डॉ० धीरज सिंह जी ने उपजिलाधिकारी महोदय जसवन्त नगर को धन्यवाद किया तथा शिवा कोल्ड स्टोर के मालिक विनोद यादव जी को भी सधन्यवाद दिया कि विषम परिस्थिति में बैठक निर्विघ्न सम्पन्न हुई उन्होंने प्रदेश से आए प्रत्येक कार्यकर्ता एवं अन्तरंग सदस्य तथा अधिकारी का भी धन्वाद दिया कि आपके हृदय में महर्षि दयानन्द एवं सत्यता के संस्कार आज भी जीवित हैं जो आपको यहां आने को उत्साहित कर रहे हैं।

आपके आने से हमारा भी उत्साह बढ़ा है और सत्यता की लड़ाई के लिए मुझे आर्य समाज भुवाली नैनीताल की रक्षा हेतु ८ लाख रूपये सभा ने जमा किए हैं। आपका सहयोग मिला है उसका मैं धन्वाद करता हूं। गुरूकुल सिरसागंज, आर्य समाज गोरखपुर, आर्य सामज मु० नगर एवं आर्य सामज दूधली मु० नगर आर्य समाज सीतापुर की चर्चा करते हुए बताया कि

शेष पृष्ठ ६ पर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

प्रदूषण की समस्या का कैसे हो समाधान

आज के समय में जहाँ हम आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण हैं और अपने आपकों इन सुविधाओं का उपयोग करके गौरवान्वित महसूस करते हैं एक समय था जब गांव में परिवार की माताऐं चक्की से आटा पीसा करती थी और चुल्हे पर भोजन बनाती थी लेकिन धीरे–धीरे यह सब समाप्त होता गया क्योंकि जलाने के लिए ईधन का मिल पाना मुश्किल होता चला गया और आज गैस पर भोजन बनने लगा है। परेशानियां बीमारियां हमें घेरती जा रही है उसका एक बहुत बड़ा कारण भी है जब से माताओं ने चुल्हा चक्की छोड़कर, गैस पर भोजन, कपड़े मशीन में धोना शुरू कर दिया तब से उनका शारीरिक व्यायम बन्द हो गया शहर में जो महिलाएं कहीं नौकरी नहीं करती है और अकेले रहती है, तो दिनभर टेलीविजन देखते हुए दिन को गुजार देती हैं जिसका परिणाम उनको आगे भुगतना पड़ता है आज के समय में गाँव का वातावरण भी कोई ज्यादा ठीक नहीं है क्योंकि जब फसल कुछ बड़ी हो जाती है और उसमें कीड़े मारने वाली दवाओं को उपयोग होता है तब उससे निकालने वाली गैस किस प्रकार वातावरण को प्रदूषित करती है एक खेत से दुसरे खेत पर जाना बहुत ही मुश्किल हो जाता है एक समय था हम घर से बैलगाड़ी पर बैठकर गांव के बाजार जाया करते थे और पशु ही हमारे कृषि कार्य के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे लेकिन आज आधुनिक उपकरणों ने उनका स्थान ले लिया है पहले किसी के यहाँ साईकिल आ जाये तो वह अपने आपको गांव का विशेष व्यक्ति महसूस करता था लेकिन आज आपको साईकिल कम, मोटर साइकिल ज्यादा मिल जायेंगी हमने अपने व्यायाम करने के सारे उपकरण समाप्त कर दिये जिससे आज पूरा देश प्रदूषण की समस्या से जूझ रहा है।

दिल्ली –एनसीआर के साथ हरियाणा और पंजाब के शहरों में प्रदूषण की खतरनाक स्थिति बनती जा रही है, फसलों के अवशेष को जलाए जाने को एक सीमा तक ही उत्तरदायी माना जा सकता है, क्योंकि पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के एक हिस्से को छोड़ दें तो देश के अन्य हिस्सों में फसलों के अवशेष नहीं जलाए जाते। इस सबसे यदि कुछ स्पष्ट हो रहा है तो यही कि वायु प्रदूषण के मूल कारण धूल और धुआं हैं। प्रदूषण को बढ़ाने वाले धुएं का उत्सर्जन कल–कारखानों के साथ–साथ वाहनों से भी होना है। चूंकि हमारे ज्यादातर बड़े शहरों में वाहनों की संख्या बढ़ती जा रही है और वे जाम से भी ग्रस्त बने रहते हैं इसलिए वाहनों से धुएं का उत्सर्जन प्रदूषण का एक बड़ा कारण है। वहीं दूसरी ओर खटारा वाहनों की संख्या कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। हालांकि केंद्र और राज्य सरकारों की सभी एजेंसियां इससे भली तरह परिचित हैं कि सड़कों और निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल, वाहनों का उत्सर्जन और कारखानों से निकलने वाला धुआं शहरों के वायुमंडल को दूषित कर रहे हैं, लेकिन वे ठोस उपायों के साथ सामने नहीं आ पा रही हैं।

आज अगर प्रदूषण की समस्या का निदान करना है तो हमें महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर अमल करना होगा कि किस प्रकार गोकररूण निधि से लेकरप्राचीन वैदिक पद्धति के द्वारा अग्निहोत्र से जलवायु शुद्ध करने का वर्णन करते है।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्थ समुल्लासारम्भः

अथ समावर्त्तनविवाहगृहाश्रमविधिं वक्ष्यामः

किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं होता परन्तु जिस समय अधर्म करता है उसी समय फल भी नहीं होता। इसलिये अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते। तथापि निश्चय जानो कि वह अधर्माचरण धीरे–धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है। इस क्रम से–

अधर्मोणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति।। मनु०।।

जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ (जैसे तालाब के बन्ध तोड़ जल चारों ओर फैल जाता है वैसे) मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड, अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन और विश्वासघातादि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है। पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान, पान, वस्त्र, आभूषण, यान, स्थान, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है। जैसे जड़ कटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे अधर्मी नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचे चैवारमेत् सदा।
शिष्यांश्च शिष्याद्धर्मेण वाग्वाहूदरसंयतः।। मनु०।।

वेदोक्त सत्य धर्म अर्थात् पक्षपातरहित होकर सत्य के ग्रहण और असत्य के परित्याग न्यायरूप वेदोक्त धर्मादि, आर्य अर्थात् उत्तम पुरुषों के गुण, कर्म, स्वभाव, और पवित्रता ही में सदा रमण करे। वाणी बाहू उदर आदि अंगों का संयम अर्थात् धर्म में चलाता हुआ धर्म से शिष्यों को शिक्षा किया करे।

ऋत्विक्पुरोहिताचार्य्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः।
बालवृद्धातुरैर्वैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः।।१।।
मातापितृभ्यां यामिभिर्भ्रात्रा पुत्रेण भार्यया।
दुहित्रा दासवर्गेण विवादं न समाचरेत्।।२।। मनु०।।

(ऋत्विक्) यज्ञ का करने हारा, (पुरोहित) सदा उत्तम चाल चलन की शिक्षा कारक, (आचार्य) विद्या पढ़ानेहारा, (मातुल) मामा, (अतिथि) अर्थात् जिस की कोई आने जाने की निश्चित तिथि न हो (संश्रित) अपने आश्रित (बाल) बालक (वृद्ध) बुड्ढे (आतुर) पीड़ित (वैद्य) आयुर्वेद का ज्ञाता, (ज्ञाति) स्वागोत्र वा स्ववर्णस्थ, (सम्बन्धी) श्वशुर आदि, (बान्धव) मित्र।।१।। (माता) माता, (पिता) पिता, (यामि) बहिन, (भ्राता) भाई, (पुत्र) पुत्र, (भार्या) स्त्री, (दुहिता) पुत्री और सेवक लोगों से विवाद अर्थात् विरूद्ध लड़ाई बखेड़ा कभी न करे।।२।।

अतपास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुर्द्विजः।
अम्भस्यश्मप्लवैनैव सह तैनैव मज्जति।। मनु०।।

एक (अतपाः) ब्रह्मचर्य्य सत्यभाषणादि तपरहित, दूसरा, (अनधीयानः) विना पढ़ा हुआ, तीसरा (प्रतिग्रहरुचिः) अत्यन्त धर्मार्थ दूसरों से दान लेनेवाला, ये तीनों पत्थर की नौका से समुद्र में तरने के समान अपने दुष्ट कर्मों के साथ ही दुःखसागर में डूबते हैं। वो तो डूबते हैं परन्तु दाताओं को साथ डुबा लेते हैं।

त्रिष्वप्येतेषु दत्तं हि विधिनाप्यर्जितं धनम्।
दातुर्भवत्यनर्थाय परत्रादातुरेव च।। मनु०।।

जो धर्म से प्राप्त हुए ध्न का उक्त तीनों को देना है वह दानदाता का नाश इसी जन्म और लेने वाले का नाश परजन्म में करता है। जो वे ऐसे हों तो क्या हो–

यथा प्लवेनौपलेन निमज्जत्युदके तरन्।
तथा मिज्जतोऽधस्तादज्ञौ दातृप्रतीच्छकौ।। मनु०।।

जैसे पत्थर की नौका में बैठ के जल में तरने वाला डूब जाता है वैसे अज्ञानी दाता और ग्रहीता दोनों अधोगति अर्थात् दुःख को प्राप्त होते हैं।

पाखण्डियों के लक्षण

धर्मध्वजी सदा लुब्धश्छाद्मिको लोकदम्भकः।
वैडालव्रतिको ज्ञेयो हिंस्त्रः सर्वाभिसन्धकः।।१।।
अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकः स्वार्थसाधनतत्परः।
शठो मिथ्याविनीतश्च वकव्रतचरो द्विजः।।२।। मनु०।।

(धर्मध्वजी) धर्म कुछ भी न करे परन्तु धर्म के नाम से लोगों को ठगे (सादा लुब्धः) सर्वदा लोभ से युक्त (छाद्मिकः) कपटी (लोकदम्भकः) संसारी मनुष्यों के सामने अपनी बड़ाई के गपोड़े मारा करे (हिंस्त्रः) प्राणियों का घातक, अन्य से वैरबुद्धि रखने वाला (सर्वाभिसन्धकः) सब अच्छे और बुरों से भी मेल रक्खे उसको वैडालव्रतिक अर्थात् विडाल के समान धूर्त और नीच समझो।।१।। (अधेदृष्टिः) कीर्ति के लिए नीचे दृष्टि रक्खे (नैष्कृतिकः) ईर्श्यक किसी ने उस का पैसा भर अपराध किया हो तो उसका बदला लेने को प्राण तक तत्पर रहै (स्वार्थसाधनतत्परः) चाहै कपट अधर्म विश्वासघात क्यों न हो, अपना प्रयोजन साधने में चतुर (शठः) चाहै अपनी बातें झूठी क्यों न हों परन्तु हठ कभी न छोड़े (मिथ्याविनीतः) झूठ मूँठ ऊपर से शील सन्तोष और साधुता दिखलावे उसको (वकव्रत) बगुले के समान नीच समझों। ऐसे–ऐसे लक्षणों वाले पाखण्डी होते हैं उन का विश्वास व सेवा कभी न करें।।२।।

– क्रमशः

धरोहर

अद्वितीय प्रतिभा के धनी – आर्य समाज की नींव के पत्थर

चौ० पृथ्वी सिंह जी बेधड़क

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

आर्य जगत की आन–बान–शान की पहिचान, वाणी के जादूगर, कवि सम्राट, ग्रामीण क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचारक, हिम्मत के धनी, कलाकार, दैनिक याज्ञिक, आशु कवि, चौ० पृथ्वी सिंह जी बेधड़क का जन्म शिकोहापुर ग्राम में हुआ था। आज वह बागपत जिले में आ गया है आपने सामान्य शिक्षा प्राप्त करके पिछले जन्मों के शुभ संस्कारों से कविता करने की अद्‌भुत क्षमता अर्जित कर ली थी। आप की वाणी में जादू था अपनी बात का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार करते कि प्रत्येक आबाल वृद्ध प्रभावित होता था आपने देश की आजादी से पूर्व अपने हृदय से वे बाते आने बाले समाज के लिए कल्याणकारी योजनायें बनाई जिसे सुनकर लोग हँसते थे लेकिन जब वे सत्य सिद्ध हुई तो अब सुनकर लगता है कि वे प्रभु के सच्चे उपासक थे प्रभु प्रदत्त प्रेरणा से भविष्य वक्ता के रूप में विख्यात हुए १९४२ में एक भजन लिखा था जब कोई भी श्री जय प्रकाश नारायण जी को नहीं जानता था।

''जयप्रकाश नारायण एक दिन देश का तख्ता पलटेगा जब १९७७ में देश में कांग्रेस का तख्ता पलट गया तो लोगों को सुखद आश्चर्य हुआ कि वे भजन में कहा करते थे। इसी प्रकार एक भजन सुनाया करते थे–

एजी एजी जगत् में आयेगा तूफान।
कौन बचेगा कौन मरेगा यह जाने भगवान्।।

इस भजन में जो भविष्य वाणियां निकल रही हैं वे सब साक्षात् हो रही हैं ऐसी पवित्र और दिव्य आत्मा के स्वामी थे चौ० बेधड़क जी आपने एक भजन लिखा देश का सुधार कैसे होगा?

यह भजन भी देश की आजादी से पहले है पूरे समाज का चित्रण है कुरीतियां समाज को कमजोर कर रही थीं अतः उसका समाधान लिखा था–

''खुरपा और दरांती दे दो भिखमंगों के हाथ में।
बाबाओं की शादी कर दो वेश्याओं के साथ में।
भिरड़–ततैये लगा दो स्वागियों के गात में।

अर्थात् जो स्वस्थ भिखारी हैं जगह–जगह मांगते रहते हैं उन्हें कृषि कार्य अथवा फैक्ट्री के कार्य पर लगाया जाये तो यह प्रथा दूर हो सकती है आज भी आप शहरों में चौराहों पर रेल, बसों में गलिओं में प्रतिदिन देख सकते हैं उसका समाधान किया। दूसरा समाज में अभिशाप वेश्यावृत्ति का दिनोंदिन पनप रहा था उधर बाबाओं की फौज समाज में भार बनकर आलसी निकम्मे लोग सुल्फा भांग में स्वयं नशा करके भक्तों को बिगाड़ रहे थे। और आज भी बिगाड़ रहे हैं। उसका समाधान किया था कि इन बाबाओं की शादी वेश्याओं के साथ कर दी जायें तो वे भी परिवार बनाकर व्यवस्थित जीवन निर्वाह करके समाज का सुखद निर्माण कर सकते हैं। देश का नक्शा तभी बदल सकता है भजन बहुत बड़ा सुन्दर एवं प्रेरणा प्रद है आपकी इच्छा होगी तो पूरा भजन, को पृथक् से प्रकाशित कर सकते हैं इस प्रकार की उहा उन्हें प्रभु प्रदत्त थी मञ्च पर खड़े होकर आशुकवि थे ऐसागीत बनाते लोगों के हृदय पर सीधा प्रभाव डालता था मुझे अच्छी तरह से वह दृश्य स्मरण हो रहा है जब गुरूकुल ततारपुर की स्थापना हुई थी पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती संस्था निर्माण में चिन्तित रहते थे। समय–समय वेद प्रचार के माध्यम से धन संग्रह भी कर लेते थे अतः चौ० पृथ्वी सिंह जी वेधड़क को बुलवाया गया। ग्राम में प्रचार चल रहा था जो इतिहास के रूप में आप विशेषज्ञ थे इतिहास था महादानी कर्ण–महाभारत की लड़ाई के समय कर्ण रणभूमि में अन्तिम समय की स्थिति में अर्जुन श्रीकृष्ण उसकी परीक्षा लेने के लिए ब्राह्मण वेश बनाकर जाते हैं और दान मांगते हैं काफी लम्बा करूण रस से परिपूर्ण आख्यान है।

कि मेरे घर चले जाओ मेरी प्राण प्यारी दे देगी।
भरी भराई सोने वाली सब अलमारी दे देगी।

वे मना कर देते हैं, कि यहाँ चाहिये तो जैसे ही वे निराश होकर चल देते है तो कर्ण बहुत दुःखी होता है और कहता है ठहरो! मेरे दाँत में सोना लगा है इसे तोड़ लो जब यह कहा तो वे बोले हम कसाई हैं तेरा दाँत तोड़ेगे तो वह पड़ा–पड़ा जमीन पर पत्थर का एक टुकड़ा उठाकर स्वयं अपना दाँत तोड़ना चाहता है तभी कृष्ण उसका हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए कहते हैं कि जैसा सुना है वैसे ही निकले तुम जैसा दानी दुनियां में कोई नहीं हम तो परीक्षा लेने आए थे तुम आज पास हो गए– ऐसा कहकर बेधड़क जी ने अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया कि अरे! आज भी कर्ण की कमी नहीं है मेरे सामने कितने कर्ण बैठे हैं– स्वामी जी कोई अपने घर बना रहे हैं, आपके बच्चों के लिए ही स्वामी जी दान मांग रहे है यह कहकर गीत प्रारम्भ किया–

''विद्यापीठ गुरूकुल के वास्ते कुछ दान मांगते'' फिर क्या था दान की झड़ी लग गई ग्रामीण क्षेत्र में पैसा नहीं था गेहूँ लोग ज्यादा देते थे लेकिन उस दिन इतना दान आया स्वामी जी को भी आश नहीं थी, पांच हजार रूपये में एक बड़ा कक्ष जो आज पांच लाख में बनता है उस समय एक सामान्य किसान चौ० बरफ सिंह जी ने एक हजार रूपये का दान दिया था आप इसी भाव से कल्पना कर सकते हैं कि उनका प्रचार कितना प्रभावशाली हुआ करता था और आप आज मेरठ जिले के बड़ौत क्षेत्र में जाकर देखें तो कालेजों की संख्या बहुत अधिक है सुन्दर कालेज हैं उसका मूल कारण चौ० पृथ्वी सिंह जी बेधड़क है जो ग्राम में प्रचार करके पैसा एकत्रित करते थे और विद्यालयों का निर्माण भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए होता था गुरूकुल प्रचार हेतु आप आस–पास के ग्रामों में जाया करते थे और धन संग्रह करते थे।

मेरठ–गढ़ मार्ग पर ग्राम मछारा डिग्री कालेज है उसकी स्थापना पर भी आप आये थे उसका शिलान्यास बिरला जी ने किया था उस समय की एक घटना म० हरि सिंह आर्य दवथला वालों ने मुझे सुनाई थी कि बेधड़क जी कितने बेधड़क और हाजिर जवाब देने वाले थे उन दिनों भारत विभाजन जैसा वातावरण था देश में शान्ति की स्थापना हो तब इस, कार्यक्रम में बिरला जी ने भाषण दिया था कि भाइयों हिन्दू मुस्लिम एकता पर जोर दिया जाये ये और हम आपस में भाई–भाई हैं देश बंटने से बच जायेगा हमारा प्रयास होना चाहिए फिर बाद में नारे भी लगवाये थे।

हिन्दू मुस्लिम भाई भाई चीनी कौम कहां से आई।। मुख्य अतिथि के पश्चात् चौ० बोधड़क जी बोलने खड़े हुए तब आपने कहा कि भाइयों अभी बिरला जी ने जो कहा है बिल्कुल गलत है मैं इसका विरोध करता हूँ क्योंकि ये मुस्लिम भाई–भाई कैसे हो सकते है ये भाई तो अपनी सगी बहिन के नहीं होते समय आने पर पति बनकर शादी कर लेते हैं यह उदाहरण दिया तो जनता में सन्नाटा छा गया कि अब जो दान मिलना था वह भी नहीं मिलेगा, बिरला जी अपमान हो गया तभी यह सुनकर विरला जी ने पूछा जो त्यागी जी संस्थापक थे इनका नाम क्या है तो बताया कि इनका नाम चौ० पृथ्वी सिंह बेधड़क है ये आर्य समाज के उपदेशक हैं फिर उन्होंने कहा खुले रूप में कि ऐसी बेधड़क बातें महर्षि दयानन्द का सिपाही ही कर सकता है और किसी में ये हिम्मत नहीं है अतः ये वास्तव में ही बेधड़क है तभी से इनका बेधड़क नाम उपनाम की जगह पक्का हो गया आज भी आपके पोत्र हैं श्री सहदेव आर्य बेधड़क आप अपने दादा जी की तरह ही वेदप्रचार करके जो विद्यालय उने समय बने थे उन्हें यथा समय कार्यक्रमों पर जाकर सम्भालते रहते है और दादा जी को जिन्दा किये हुए हैं मैं उनके प्रति सदैव सम्मान का भाव इसलिए रखता हूँ कि उन्होंने परिवार की परम्परा को जीवित रखकर महर्षि दयानन्द जी के विचारों का आज भी उसी उत्साह से प्रचार कर रहे हैं।

मैं बता रहा था कि बिरला जी ने बेधड़क जी की प्रशंसा की तथा उन्हें कुछ राशि देकर सम्मानित भी किया। बचपन में हमें उनकी सेवा करने का अवसर मिला है एक बार बैठे हुए चर्चा

शेष पृष्ठ ४ पर

राष्ट्रगान पर मदरसों की लकीर?

– राजीव चौधरी

पिछले ७० वर्षों में ऐसा कोई भारतीय नहीं होगा, जो राष्ट्रगान के शब्दों और उन्हें दी गई धुन से गुजरा न हो। राष्ट्रगान पिछले ७० वर्षों से हमारी स्वतंत्रता और संप्रभुता पर गर्व करने का मौका देता रहा है। १६११ में लिखे गीत को २४ जनवरी १६५० को भारत का राष्ट्रगान घोषित किया गया था। तब से ही यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, संस्कृति, एकता व अखण्डता का प्रतीक बना हुआ है। लेकिन अब ७० वर्ष बाद इसे लेकर एकाएक राजनीति शुरू हो चुकी है। इस गीत के शब्दों से किसी की स्वतंत्रता का हनन होने लगा तो किसी के मजहब को अचानक खतरा उत्पन्न होने का भय सताने लगा है। राष्ट्रगान को लेकर अब मदरसे एक लकीर खींच रहे हैं। परन्तु इससे भी ज्यादा दुखत यह है कि ऐसे करने वालों का, समर्थन करने वालों की भी कोई कमी नहीं है। नहीं तो क्या वजह है कि कश्मीर में होने वाले विरोध प्रदर्शनों में पाकिस्तानी झंडा लहराने, भारत–पाकिस्तान झंडा लहराने, भारत–पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मैच के दौरान पाक की टीम का समर्थन करने और अपने देश के ही राष्ट्रगान को हिन्दूवादी और अपवित्र बताने वालों के समर्थन में भी खड़े होने वाले हजारों लोग मिल जाते हैं। भले ही ऐसे कट्टरपंथी लोगों की संख्या अभी कम हो लेकिन इस बीमारी को नासूर बनाने वालों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है।

...राष्ट्रगीत वन्देमातरम को लेकर समय समय टकराव देखा इतिहास इसका साक्षी भी कि 1938 में मुहम्मद अली जिन्ना ने जब खुले तौर पर पार्टी के अधिवेशनों में वन्दे मातरम् गाए जाने के खिलाफ बगावत की थी। परिणाम स्वरूप देश को बंटवारे का दंश झेलना पड़ा था। उस समय भी यही मजहबी फुंकार सुनाई दी थी आज फिर उसी विचारधार को जिन्दा रखने का कार्य पुनः दोहराया जा रहा है।...

हाल ही में एक बार फिर इलाहाबाद हाई कोर्ट ने मदरसों की तरफ से सरकार के आदेश को चुनौती देने वाली चाचिका खारिज कर दी है। हाई कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया है कि मदरसों को राष्ट्रगान गाने से छूट नही मिलेगी। हाई कोई ने कहा है कि राष्ट्रगान और तिरंगे का सम्मान संवैधानिक कर्तव्य है। उच्च न्यायालय ने राष्ट्रगान को जाति, धर्म और भाषा भेद से परे बताते हुए मदरसों की आपत्तियों को दरकिनार कर दिया। हाई कोर्ट के इस फैसले के बाद अब मदरसों में राष्ट्रगान अनिवार्य रूप से गाना ही पड़ेगा। इससे पहले १५ अगस्त को मदरसों में ध्वजारोहण और तिरंगा फहराने का कार्यक्रम करने और इसकी रिकॉडिंग करने के फरमान को लेकर भी यूपी में मतभेद के स्वर खड़े हो चुके हैं।

देश में मजहब, मजहब के नाम पर राजनीति और उस राजनीति से लाभ उठाने वाले नेता अब देश से भी बड़े बन चुके हैं। शायद यही वजह है कि इस देश के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना तो दूर ये लोग बड़े आराम से उससे जुड़े प्रतीक, चिन्हों और सम्मानों का मजाक उड़ा सकते हैं और फिर बड़े शान से उससे मिलने वाली सुविधाओं पर अपना हक जता सकते हैं। आप यहां धर्म, जाति याा किसी और खेल से अपने अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं। और उसे हासिल भी कर सकते हैं लेकिन बात जब देश के प्रति अपने कर्तव्यों की आए तो मजहब और जाति के नाम पर उससे मुंह फेर सकते हैं। यदि कोई इनके इस आचरण पर सवाल उठाये तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का रोना रोया जा सकता है।

राष्ट्रगीत वन्देमातरम को लेकर समय समय टकराव देखा इतिहास इसका साक्षी भी कि १६३८ में मुहम्मद अली जिन्ना ने जब खुले तौर पर पार्टी के अधिवेशनों में वन्दे मातरम् गाए जाने के खिलाफ बगावत की थी। परिणाम स्वरूप देश को बंटवारे का दंश झेलना पड़ा था। उस समय भी यही मजहबी फुंकार सुनाई दी थी आज फिर उसी विचारधार को जिन्दा रखने का कार्य पुनः दोहराया जा रहा है। आखिर क्या कारण कि पिछले वर्ष कोलकाता के एक मदरसे में एक हेडमास्टर को सिर्फ इसलिए पीटा जाता है क्योंकि उसने आने वाली पीढ़ियों को इस देश का राष्ट्रगान सिखाने की कोशिश की थी। ऐसी घटनाएं यहां पहली बार नहीं हुई हैं लेकिन अफसोस है कि ये बार–बार दोहराई जाती रही हैं। सरकारों को सब पता है लेकिन फिर भी सत्ता का लालच उन्हें इन घटनाओं के प्रति कुछ करने और इन्हें दोबारा घटने से रोकने के बजाय अपना मुंह और आंखें बंद रखने पर विवश करता है।

सब जानते हैं कोई भी देश सिर्फ अपने विशालकाल क्षेत्रफल और संसाधनों के बल पर महान नहीं बनता है बल्कि उसे महान बनाते हैं उसे देश के नागरिक। उसका राष्ट्रवाद, उसके नागरिकों का देश के प्रति अगाध प्रेम उसके प्रतीकों, चिन्हों के प्रति उसकी निष्ठा और उसकी संस्कृतिक विरासत के प्रति उनकी श्रद्धा। यदि नागरिकों के मन में ही अपने ही देश के सम्मान और प्यार नहीं होगा तो भला कैसे वह देश शक्तिशाली बनेगा और आगे बढ़ेगा। ऐसे देश को बाहरी दुश्मनों की जरूरत ही क्या है जिसके अपने ही इतनी घातक सोच रखते हैं? मात्र एक राष्ट्रगान से काजी अख्तर के खिलाफ उस समय फतवा जारी कर दिया गया था उसे साफ शब्दों में कहा गया था कि मदरसा और उस इलाके में भी कदम न रखें। जब एक देश में उसका राष्ट्रगान ही शर्मिदा होता हो और उस देश का ध्वज गैर मजहबी हो जाये तो क्या उस देश में धर्मनिपेक्षता का सिद्धांत बौना नहीं हो जाता? पर शायद ही किसी राजनीतिक दल को देश और उससे जुड़े प्रतीकों को सम्मान न देने वालों के खिलाफ कार्यवाही करने की चिंता हो। जब राजनीति करने वालों को ही देश की चिंता नहीं है तो भला इन कट्टरपंथियों की फिक्र उन्हें क्यों होने लगी और इन लोगों को इस देश की फिक्र क्यों होने लगी?

पृष्ठ ३ का शेष

अद्वितीय प्रतिभा के धनी – आर्य समाज की नींव के पत्थर....

होने लगी कि ततारपुर के आस–पास चारों तरफ सभी ग्रामों में वेद प्रचार हो गया लालपुर ग्राम में कोई उपदेशक जाने को तैयार नहीं होता बेधड़क जी के सामने प्रस्ताव रक्खा तो वे तुरन्त तैयार हो गए और ग्राम में जाकर प्रचार किया तथा काफी प्रभाव हुआ।

उनके प्रचार की शैली प्रभावशाली होती थी भोला–कर्ण जिहाना ये तीन उनके साथी साथ रहते थे पैदल भी चलकर देहात में जाना होता था कभी विलम्ब हो जाये तो लोग उन पर क्रोधित भी हो जाया करते थे विवाह, नामकरण के अवसर पर देहात में प्रचार करने का एक सुलभ और सुन्दर अवसर होता था एक घटना उनके जीवन की बड़ी प्रसिद्ध है कि कोई भरत सिंह नामक व्यक्ति के यहां पर खुशी का अवसर था आपको पहुंचना था गाड़ी नहीं मिली पैदल चलकर आये काफी विलम्ब हो गया तो आते ही चौ० साहब को कोप भजन होना पड़ा तभी आपने न पानी पिया न आराम किया न कपड़े बदले और सीधे ही जाकर प्रचार प्रारम्भ कर दिया। जो भी भजन गाया ईश्वर भक्ति का था पर अन्त में अपने हृदय की वेदना भी व्यक्त कर दी।

न मिला टूक–लग रही भूख–गया मुख भी सूख,
भातू भूत तेरे आया गंजा गावनियाँ।।

चौ० पृथ्वी सिंह जी की बेधड़क होने की झलक प्रत्येक स्थान पर स्पष्ट दिखाई देती थी उसे ऐसी लताड़ लगाई कि वह वहाँ पैरों में गिरकर क्षमा याचना करने लगा फिर उन्हें भोजन आदि काराया और बाद में प्रसन्नता से वेद प्रचार हुआ। ऐसे वेद प्रचारक ग्राम–ग्राम में आर्य समाज की नींव रखने वाले तथा अन्धेरे में उजाला करने वाले मिश्नरी भाव से आर्य समाज के प्रचारकों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए उनके व्यक्तिव एवं दिनचर्या से भी लोग प्रभावित हुआ करते थे दैनिक यज्ञ करते थे मुझे भी उनकी सेवा करने का सौभाग्य मिला है उनके विचारों को सुना है आज भी स्मृतियाँ नई होकर प्रेरणा प्रदान करती है।

मनुस्मृति और वेद के ऊपर
जिस–जिस को विश्वास नहीं।
आज नहीं तो कल परसों
उसके बचने की आस नहीं।

ऐसी प्रेरणा देकर लोगों में वेद के प्रति विश्वास स्थापित करने वाले बेधकड़ जी के प्रति मैं आपनी श्रद्धा भावना व्यक्त करते हुए उन्हें नमन करता हूँ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यों पदाधिकारियों सहयुक्त प्रतिष्ठित अंतरंग सदस्यों के नाम खुला पत्र

–डॉ० धीरज सिंह आर्य

मान्यवर,

कतिपय शिकायती पत्रों की जांच के दौरान ६. ११.२०१६ के तत्कालीन प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा के प्रधान पद के अधिकार पर रोक लगाते हुए मुझे उप प्रधान (डॉ० धीरज सिंह) को समस्त अधिकार सौंपे गये जाँच में स्पष्ट हुआ कि गुरूकुल सिरसागंज की ५० बीघा जमीन मात्र ५००० रूपये के वार्षिक किराये पर ६६ वर्ष के लिए दे दी, यानी बेच दी।

इस आरोप के सिद्ध होने से पहले श्री देवेन्द्रपाल वार्म कहते थे कि गुरूकुल की यह भूमि मैंने नहीं श्री जयनारायण अरूण जी ने दी है, परन्तु रिकार्ड सामने आने पर पोल खुली है।

इस तथ्य के खुलासा होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की बैठक वृदावन में २६.३.२०१७ को सम्पन्न साधारण सभा द्वारा श्री देवेन्द्रपाल वर्मा को प्रधान पद व सदस्यता से छः वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया।

इस कार्यवाही के क्रियान्वयन पर डिप्टी रजिस्ट्रार द्वारा दिनांक ३०.३.२०१७ को रोक लगा दी गई डिप्टी रजिस्ट्रार के ३क आदेश को मा० उच्चन्यायालय द्वारा १२.४.२०१७ के आदेश से रोक लगा दी।

श्री देवेन्द्रपाल वर्मा द्वारा मा० उच्च न्यायालय में अनेक रिट योजित की। स्पेशल अपील सं० २२८/१७ में पारित आदेश में लिखा गया कि जब देवेन्द्र पाल वर्मा को साधारण सभा से निष्कासित किया जा चुका है, तब वे अपने आपको प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० कहने और लिखने का अधिकार नहीं है। श्री देवेन्द्रपाल वर्मा द्वारा अकेले गुरूकुल सिरसागंज की जमीन को ही खुर्दबुर्द नहीं किया गया बल्कि उनके द्वारा। आर्य सामाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर के द्वारा विद्यालय के लिए खरीदी गयी जमीन को १० प्लाटो में बेचने में भी सहायता की गई सब जमीन की बाजार कीमत/चार करोड़ रूपये, खाते में ७२ लाख ही जमा कराये गये। वहां के आर्य समाजियों द्वारा विरोध कर खाते में इस धन को निकालने से रोक लगवाई गयी परन्तु जब गायत्री दीक्षित को डिप्टी रजिस्ट्रार द्वारा मेरे स्थान पर कार्यवाहक प्रधान मनोनीत किया गया तब देवेन्द्र पाल वर्मा ने अपने प्रभाव का प्रयोग कर सर्वप्रथम श्रीमती गायत्री दीक्षित से उक्त खाते के संचालित करने के लिए आदेश कराया जिस आदेश को मेरे द्वारा पुनः अधिकार मिलने पर निरस्त किया गया। इस प्रकार एक ही प्रकरण में लगभग ३ करोड़ २८ लाख की हेराफेरी की गई।

२. आर्य समाज दूधली मु० नगर की अंतरंग सभा को ६.६.१२ भंग कर प्रशासक नियुक्त कर दिया और आर्य समाज की १४ बीघा जमीन पर अवैध धन वसूल कर अवैध मकान बनवा दिये गये यह तत्य लेखपाल की रिपोर्ट में आया है।

श्री देवन्द्र पाल वर्मा आर्य समाज मुजफ्फर नगर शहर पर ३० वर्षों से काबिज है इस सामज में २२ दुकानें है २ गोदाम है तथा आर्य समाज का फील्ड विवाह आदि समारोह पर ११००० हजार व २१००० हजार रूपये किराये पर दिया जाता है इस सब संसाधनों से प्राप्त आय को रखने के लिए कोई खाता आज तक किसी बैंक में खोला नहीं गया है।

यह आर्य समाज के नियमों व उपनियमों का खुला उल्लंघन है देवेन्द्रपाल वर्मा इस समाज के प्रधान है व पद का घोर दुरूपयोग है।

इस सब पर मेरे द्वारा कार्यवाही करने पर पूरे प्रदेश में घूम–घूम मेरे विरूद्ध कुछ फर्जी हस्ताक्षरों से डा० भानु प्रकाश से गलत आरोप लगवाकर अविश्वास का नोटिस दिया है जिसका उत्तर निम्न प्रकार है–

१. अविश्वास नोटिस के बिन्दु सं०–०१ के सापेक्ष आपको अवगत कराना है कि संस्था कर्मचारियों के वेतन आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की साधारण सभा की बैठक दिनांक २३ व २४ जनवरी, २०१४ में एजेण्डा के विषय संख्या–११ के अन्तर्गत पारित प्रस्ताव सं०–३ में संस्था के सम्पूर्ण कर्मचारियों के वेतन बढ़ोत्तरी का प्रस्ताव पास किया जा चुका था, जिसकी पुष्टि भी हो चुकी है। तत्कालीन प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी के भी कार्यवाही पुष्टि कर्त्ता के रूप में हस्ताक्षर मौजूद हैं। इसमें मेरे द्वारा कोई व्यक्तिगत रूप में वेतन बढ़ोत्तरी का प्रश्न ही नहीं है, जो उपरोक्त कार्यवाही से मिलान किया जा सकता है।

२. अविश्वास नोटिस के बिन्दु सं०–०२ के सम्बन्ध में स्पष्ट किया जाना है कि अधोहस्ताक्षरी द्वारा श्री शत्रोहन शर्मा–सेवक, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की कभी भी सेवायें समाप्त नहीं की गई, जो श्री शत्रोहन शर्मा के प्रार्थना पत्र पर निर्देश एवं स्वीकृत दिनांक २१.११.२०१५ से स्वतः स्पष्ट है, जिसमें न तो मेरा नाम, न निर्देश और न ही स्वीकृत है और न ही मेरे द्वारा कोई आदेश जारी हुआ है, जो शत्रोहन शर्मा की व्यक्तिगत पत्रावली पर मिलान किया जा सकता है।

३. अविश्वास नोटिस के बिन्दु सं०–०३ श्री हरीश कुमार शास्त्री जी बीमार रहने के कारण अनुपस्थित रहे, जिसके कारण उनका वेतन माह नवम्बर, २०१५ भुगतान नहीं किया गया था। श्री हरीश शास्त्री द्वारा मेडिकल रिपोर्ट प्रस्तुत किया गया तथा मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर चिकित्सीय अवकाश सभा मन्त्री द्वारा स्वीकृत किये जाने एवं वेतन बाऊचर संस्था मन्त्री द्वारा स्वीकृत किये जाने के उपरान्त दिनांक १०.०२.२०१६ को माह नवम्बर, २०१५ का अधोहस्ताक्षरी द्वारा वेतन भुगतान किया गया है, जो सभा के अभिलेखों से मिलान किया जा सकता है।

४. अविश्वास नोटिस के बिन्दु सं० – ०४ श्री आतुतोष सिंह चौहान–कम्प्युटर आपरेटर का प्रार्थना पत्र विगत ३० मई, २०१६ से लम्बित था। इसी प्रार्थना पत्र के क्रम में अधोस्ताक्षरी के समक्ष दिनांक–१६–११–२०१६ को श्री आशुतोष सिंह चौहान द्वारा प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया गया, जिसमें सभा मन्त्री से आख्या दिये जाने के निर्देश जारी किये गये तथा सभा मन्त्री द्वारा कार्यालय की रिपोर्ट प्राप्त करने के उपरान्त मेरे समक्ष प्रस्तुत किया गया, जिसमें सभा मन्त्री से आख्या दिये जाने के निर्देश जारी किये गये तथा सभा मन्त्री द्वारा कार्यालय की रिपोर्ट प्राप्त करने के उपरान्त मेरे समक्ष प्रार्थना स्वीकृति हेतु दिनांक १८.११.२०१७ को अग्रसारित किया गया, उपरोक्त संस्तुती के आधार पर वेतन रू० ८६२५.०० में मात्र रू० १३७५/– की बढ़ोत्तरी स्वीकृत करते हुए रू० १००००.०० निर्धारित किया गया है। जो अन्य कर्मचारियों के बराबर है।

५.अविश्वास नोटिस के बिन्दु सं० ०५ असत्य, झूठा एवं मनगढ़न्त है। मेरे द्वारा श्री गोविन्दराम (कुक) का वेतन कभी भी रू० ४०००.०० (रूपये चार हजार) नहीं बढ़ाया गया है। इसलिए किसी भी नियम के उल्लंघन एवं वित्तीय अनियमितता का प्रश्न ही नहीं है।

६. अविश्वास नोटिस के बिन्दु सं० –०६ का जवाब पत्र की भूमिका में निहित है, अतः माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद का स्थगन आदेश दिनांक ०७.०७.२००५ आज भी प्रभावी है।

प्रेरक प्रसंग –

भीख नहीं सीख

– सुधीर कुमार

कलकत्ता निवासी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर केवल परोपकारी, सेवाभावी रूप में ही प्रसिद्ध नहीं थे अपितु वे महादानी भी थे। अवसर पड़ने पर अपना सर्वस्व लुटाने में वे कभी पीछे नहीं रहे।

एक बार वह मार्ग में जा रहे थे किसी भिखारी बालक ने उनके आगे हाथ फैलाते हुए याचना के स्वर में कहा, "बाबा! एक पैसा दे दो।"

बाबा ने उसकी ओर देखा, नन्हा प्यारा बालक था। उन्होंने उससे पूछा, "बालक! यदि मैं एक पैसे की अपेक्षा तुम्हें एक रूपया दे दूँ तो तुम क्या करोगे?

रूपये बात सुनकर बालक का मुख प्रसन्नता से खिल उठा और बोला, "बाबा ! फिर तो मैं भीख मांगना ही छोड़ दूंगा।"

विद्यासागर ने आगे कुछ नहीं पूछा और उसके हाथ पर एक रूपया रख कर आगे बढ़ गये।

बहुत वर्षों बाद एक विद्यासागर फिर उसी मार्ग से जा रहे थे। सामने से एक व्यक्ति धोती कुरता पहने हुए आया और उसने विद्यासागर के चरण–स्पर्श किये। विद्यासागर सहसा ठिठक गये। उसकी ओर देखने लगे और पहचानने का यत्न भी करने लगे, किन्तु पहचान नहीं पाये।

युवक ने वहीं खड़े एक दुकान की ओर संकेत करते हुए कहा, "बाबा! यह दुकान आपकी है।"

"मेरी यहां तो क्या कलकत्ते में भी कोई दुकान नहीं है।"

"बाबा ! मैं बताता हूँ। बहुत वर्ष पहले जब मैं छोटा सा था तो भिक्षा मांगा करता था। एक दिन इसी सड़क पर आपके दर्शन हो गये तो मैंने एक पैसा देने की अपेक्षा एक रूपया मुझे थमा दिया और आप आगे निकल गये।

"उस दिन आपने यह मन्त्र सिखाया था कि मनुष्य को अपनी आजीविका खुद अर्जित करनी चाहिए, भीख मांगना ठीक नहीं। मैंने आजीविका के अनेक तरीकों पर विचार किया और अन्त में उस रूपये के कुछ फल खरीदे, कुछ आय हुई। दूसरे दिन और अधिक खरीदे, फिर आय बढ़ी, इस प्रकार आय बढ़ाते–बढ़ाते अन्त में यह दुकान खरीद ली और आज इसमें बैठ कर व्यवसाय करता हूँ।"

युवक की बात सुनकर विद्यासागर को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने युवक की पीठ थपथपाई और उसे अधिक उन्नति करने का आशीर्वाद देते हुए कहा, "बेटा! जो लोग तुम्हारी तरह शिक्षा ग्रहण करते हैं, सफलता उनक चरण चूमती है। ईश्वर तुम्हारी उन्नति में सहायक हो।"

यह कर कर वे आगे बढ़ गये।

सिर्फ सीसीटीवी ही नहीं संस्कारों की भी आवश्यकता है!

– अनित तिवारी

दिल्ली से सटे गुरूग्राम के रेयान इंटरनेशनल स्कूल में एक छात्र की हत्या के बाद देश भर में स्कूलों में सीसीटीवी कैमरे लगाने की जरूरत महसूस की जा रही है। हलांकि तमा अभिभावक और सुरक्षा विशेषज्ञ केवल इतनेभर से बच्चों की सुरक्षा को लेकर सुनिश्चित नहीं हो पा रहे हैं। वे मांग कर रहे हैं कि बच्चों को लाने–ले जाने वाली स्कूली बसों में कोई महिला शिक्षक भी होनी चाहिए। चूँकि गुरूग्राम की घटना ने दश भर में असर डाला इसलिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने आनन–फानन स्कूली बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी स्कूलों पर डालते हुए उन्हें सुरक्षा संबंधी नए दिशा–निर्देश जारी कर दिए। उसकी ओर से कहा गया है कि इन निर्देशों पर अमल न करने वाले स्कूलों की मान्यता वापस ली जा सकती हैं इन निर्देशों के तहत स्कूलों में सीसीटीवी कैमरे तो लगाना ही है, कर्मचारियों का पुलिस सत्यापन भी कराना है और साथ ही मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन भी। यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए कि देश के सब स्कूलों में ऐसा कुछ हो पाएगा। ध्यान रहे कि रेयान इंटरनेशनल स्कूल की घटना के चंद दिन बाद ही दिल्ली के एक स्कूल में एक बच्ची यौन शोषण का शिकार बनी। इसी दौरान देश के अन्य हिस्सों के स्कूलों में ऐसी कई घटनाएं घटी जिनसे बच्चों की सुरक्षा का सवाल और अधिक गंम्भीर रूप में उभरा। अभी लोग स्कूली बच्चों की सुरक्षा को लेकर ही चिंतित थे कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्राओं से छेड़खानी के मामले ने राष्ट्रीय मामले का रूप ले लिया। छेड़खानी की घटना से व्यक्ति छात्राओं की जब कहीं कोई सुनवाई नहीं होती तो उन्होंने बल–प्रदर्शन का रास्ता चुना, लेकिन विशविद्यालय प्रशासन ने आंदोलनरत छात्राओं से संवाद करने की जरूरत नहीं समझी। इसके बाद का आंदोलन बेकाबू हुआ और उसे नियंत्रित करने के नाम पर छात्रओं पर लाठी चार्ज हुआ। इतना सब होने के बाद अब छात्राओं की सुरक्षा के लिए सारे उपाय होते दिख रहे हैं जिन पर यदि पहले ही ध्यान दे दिया गया होता तो शायद छात्राओं को आंदोलन करने की जरूरत नहीं पड़ती।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्राओं की सुरक्षा निश्चित करने के लिए जो तमाम उपाय सुझाए गए हैं उनमें एक यह भी है कि परिसर के ६५ स्थानों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त महिला सुरक्षा कर्मियों की भी तैनाती की जाएगी। यह पहला विश्वविद्यालय नहीं होगा जहां छात्राओं की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। इस तरह के उपायों की जरूरत अन्य अनेक विश्वविद्यालयों में भी पड़ चुकी है। दरअसल जैसे–जैसे बच्चों और महिलाओं की सुरक्षा का सवाल गंभीर रूप लेता जा रहा है वैसे–वैसे नए–नए सुरक्षा उपाय सामने आ रहे हैं। इन उपायों के तहत सबसे प्रभावी सीसीटीवी कैमरे ही माने जा रहे हैं और यही कारण है कि सर्वाजनिक स्थलों से लेकर अन्य अनेक स्थानों और यहां तक कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों में सीसीटीवी कैमरों की जरूरत बढ़ती जा रही है। निःसन्देह सीसीटीवी कैमरे शरारती और अपराधी तत्वों के लिए एक प्रतिरोधक का कार्य करते है और उनके जरिये सुरक्षा स्तर को बढ़ाने में मदद मिलती है, लेकिन यदि यह सोचा जा रहाहै कि हर जगह सीसीटीवी कैमरे लगाकर स्कूली बच्चों, छात्राओं और महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है तो यह एक हद तक ही सही है। बच्चों की सुरक्षा के सवाल पर लोगों का ध्यान आकृषित करने के लिए देश भर में पद यात्रा करने निकले नोबेल पुस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का कहना है कि करीब ५३ प्रतिशत बच्चे यौन शोषण का शिकार बनते है। कहना कठिन है कि वह आंकड़े तक कैसे पहुंचे, लेकिन इस पर कोई दो राय नहीं हो सकती कि बच्चों के साथ किशोरियों, युवतियों और महिलाओं की सुरक्षा को लेकर चिंताएं लगातार बढ़ती जा रही है। ये इसीलिए बढ़ रही है क्योंकि छेड़छाड़ और दुष्कर्म की घटनाएं बढ़ रही हैं।

कैलास सत्यार्थी का यह भी कहना है कि बच्चों के यौन उत्पीड़न ने एक महामारी का रूप ले लिया है। निःसन्देह यह अपराध एक महामारी इसलिए नहीं बना कि पर्याप्त सीसीटीवी कैमरे नहीं हैं। महिलाओं की सुरक्षा के मामले में इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि निर्भया काण्ड को कठोर किए जाने के बाद भी हालत में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं दिख रहा है।

यह सही है कि अपने देश में सार्वजनिक स्थलों में सुरक्षा का वैसा स्तर नहीं है जैसा होना चाहिए, लेकिन यह समझने की जरूरत है कि सुरक्षा उपाय दुरूस्त करने और उसके तहत सीसीटीवी कैमरे लगाये जाने के साथ–साथ कुछ और भी करने की जरूरत है। कम से कम यौन अपराध के मामले में तो है ही। अकेले सीसीटीवी कैमरे बच्चों और महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित नहीं कर सकते। यदि ऐसा कुछ होता तो न्यूयार्क इस तोहमत का शिकार नहीं बना होता। आज अपने परिवार और बच्चों को संस्कार देने की आवश्यकता है, घर का वातावरण, तथा रहन सहन खान–पान सभी शुद्ध करना होगा।

पृष्ठ १ का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग बैठक ...

आर्य समाज एवं संस्थाओं को बनाने के लिए लोगों को धन एवं भूमि का दान देकर अपना समर्थन किया आज अधिकारी उसे बेचकर अपना घर बना रहे हैं, आर्य समाज के कर्णधार बनने का दम्भ भर रहे हैं। आर्य कार्यर्ताओं को ऐसे स्वार्थी लोगों से सावधान रहना है और सत्य की रक्षा के लिए संघर्ष करना है तथा संघर्ष करने वालों का सहयोग करना है यही महर्षि दयानन्द जी का आदेश है कि अन्यायी बलवान राजा से भी न डरे तथा धर्मात्मा निर्बल से भी सदा डरता रहे अर्थात् उसका सम्मान करे तभी सत्य की रक्षा होगी पुनः सभी को धन्यवाद दिया। अन्त में विनोद यादव जी मालिक शिवा कोल्ड स्टोर जसवन्त नगर ने प्रदेश से आये सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। सभा मन्त्री जी ने आर्य समाज इटावा के प्रधान श्री रूपकिशोर आर्य जी एवं कोषा० श्री सुरेन्द्र बहादुर जी आर्य तथा श्री उदय प्रकाश मुदबिल जी की पूरी समिति का आभार व्यक्त किया जिन्होंने सभी अतिथियों के सुन्दर भोजन–आवास तथा प्रकाश की व्यवस्थाकी आर्य समाज इटावा नया शहर के लिए, सभा की ओर से बहुत –बहुत शुभ कामनायें स्वीकार हों।

प्रेरक प्रसंग–

कुछ काम करो

सुकरात के पास एक मनुष्य आया और कहने लगा– "आय कम है। घर में बाल–बच्चे और खाने–पीने वाले बहुत हैं। निर्वाह करना कठिन हो रहा है। कोई उपाय बताने की कृपा कीजिए, जिससे इस कष्ट से छुटकारा मिलें।"

सुकरात ने पूछा–"घर के सब लोग क्या काम करते हैं" वह मनुष्य बोला– "क्या वे किसी के नौकर हैं जो काम करें।" सुकरात ने कहा–" तब तो नौकर ही श्रेष्ठ हैं जो काम करके खाते हैं।" वह बोला–" मैं आपका अभिप्राय नहीं समझा।" सुकरात ने बताया–"घर के सब मनुष्यों, बच्चों को भी कुछ न कुछ उपयोगी काम अवश्य ही करना चाहिए। उस काम से जो आय होगी वह आवश्य ही सबके व्यय के लिए पर्याप्त होगी।"

थोड़े दिन बाद वही व्यक्ति फिर आया और कहने लगा– "आपकी कृपा से सब ठीक हो गया है। घर की स्त्रियाँ और बच्चे सीने–पिरोने, बुनने और काढ़ने आदि किसी न किसी उपयोगी काम में लगे रहते हैं। पर्याप्त आय हो जाती है। सब काम भली प्रकार चल जाते हैं। परन्तु एक उलझन पैदा हो गई है। घर के सब लोग अपने आपको तो अब खूब कमाऊ समझते हैं और मुझे निखट्टू कहते हैं।"

सुकरात ने उसे एक कहानी सुनाई और कहा– "घर जाकर यह कहानी सबको सुना दो। बस फिर कोई उलझन शेष न रहेगी। उसने वही कहानी घर जाकर सबको सुनाई। उस दिन से सबने उस व्यक्ति को निखट्टू कहना छोड़ दिया। सुकरात की वह कहानी इस प्रकार है–

भेड़ों ने अपने स्वामी से कहा–"हम तुम्हें अन्न देती हैं, बच्चे देती हैं, दूध देती हैं। फिर भी तुम हमें कुछ नहीं देते। जंगल में चुग–फिर कर हम अपना पेट भरती हैं और तुम्हारा यह कुत्ता तुम्हें कुछ भी नहीं देता, फिर भी तुम इसे अपने भोजन में से हिस्सा देते हो। क्या यह अन्याय नहीं है?

मालिक से पूर्व ही कुत्ते ने उनको उत्तर दिया– "नहीं, यह तो सर्वथा न्याय है। यह मैं ही हूँ तो तुम्हारी रक्षा करता हूँ नहीं तो तुम्हें भेड़िया खा जाये या चोर चुराकर ले जाये। यदि मैं तुम्हारी रक्षा के लिए सावधान न रहूँ तो चिन्ता के मारे तुम्हारा चलना–फिरना और चरना भी बन्द हो जाये।" भेड़ें समझ गयीं। सार–परिश्रम व उद्योग वह सोने की चाबी है जो भाग्य के फाटक को खोल देती है।

गंगामेला गढ़मुक्तेश्वर -तिगरी में वेद प्रचार

१ नवम्बर से ४ नवम्बर २०१७ तक कार्तिक गंगा मेला गढ़मुक्तेश्वर एवं तिगरी (अमरोहा) मेले में वेद प्रचार का एवं योग शिविर का आयोजन किया गया प्रातः काल यज्ञ एवं उपदेशकों का क्रम चला स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के निर्देशन में गुरूकुल पूठ के ब्र० ने वेदपाठ यज्ञ तथा दिन में योग शिविर में योगासनों का प्रदर्शन किया स्टे नैचूरल फाउन्डेशन एवं गुरूकुल पूठ का सामूहिक आयोजन हुआ उधर तिगरी में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा ने सुन्दर आयोजन किया।

सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी का उद्‌बोधन प्रभावशाली रहा म० जगमाल सिंह, म० राकेश आर्य, ओमपाल आर्य, वन्दना आर्या के सुन्दर भजन हुए ब्र० दयानन्द आर्य ने धनुर्विद्या द्वारा जिला पंचायत अध्यक्ष रेणु चौधरी का स्वागत किया गया।

प्रदेशीय उपाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र गाँधी मुरादाबाद ने भी आशीर्वाद दिया संयोजन हेतराम सागर ने किया तथा जिला सभा अमरोहा के प्रधान ओमपाल सिंह, मंत्री प्रदीप आर्य, कोषाध्यक्ष नन्हें सिंह आर्य के अलावा बुध सिंह पूर्व अध्यक्ष, नत्थू सिंह आर्य, वेदपाल आर्य, यशपाल आर्य, चन्द्रपाल आर्य, रोहताश आदि–आदि का सहयोग रहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से जिला सभा विजनौर, मेरठ, गा०बाद गोरखपुर, बुलन्द शहर, सहारनपुर, शुक्रताल, जहाँ–जहाँ वेद प्रचार के शिविर लगे हैं सभी आयोजक महानुभावों को बहुत बहुत शुभकामनाएं स्वीकार हों।

ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य
उपमन्त्री– आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०
अध्यक्ष– जिला सभा, गाजियाबाद

बाबू सिंह आर्य पब्लिक स्कूल डुप्टा कलां सम्भल

२७, २८, २९ अक्टूबर २०१७ को स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती दिल्ली की अध्क्षता में ३ दिन ३ यज्ञकुण्डों में यजुर्वेदीय यज्ञ का सफल आयोजन हुआ डॉ० धर्मेन्द्र जी शास्त्री दिल्ली यज्ञ संयोजन कर रहे। वेदपाठ गुरूकुल गौतम नगर दिल्ली के छात्रों ने किया आचार्य आनन्द कुमार जी गुरूकुल के स्नातक है पुलिस सेवा से अवकाश लेकर अब समाज सेवा कार्य कर रहे हैं पिता जी के नाम पर विद्यालय संचालन कर रहे हैं संस्कारों से उन्हें शुभ गुण युक्त किया जा रहा है सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरसस्वती जी ने भी उद्‌बोधन दिया दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य ने भी अपना आशीर्वाद दिया आर्य भजनोपदेशक श्री नरेशदत्त आर्य तथा मथुरा से श्री उदयवीर सिंह आर्य ने विचारों से आर्यजनता एवं बच्चों ने ३ दिन तक लाभ उठाया। व्यवस्था अति सुन्दर रही जिला मन्त्री दयाशंकर आर्य का सहयोग भी प्रशंसनीय रहा।

2. आर्य समाज कर्णवास बुलन्दशहर का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ आचार्य प्रमोद कुमार जी हिसार हरयाणा के उपदेशों का आर्य जनता का भरपूर लाभ उठाया।

3. आर्य समाज मोढ़ा– मुरादाबाद में मा० भगवानदास जी के घर पर चतुर्वेद शतक यज्ञ एवं त्रिदिवसीय सत्संग का आयोजन ४, ५, एवं ६ नवम्बर, २०१७ को स्वामी अखिलानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में हुआ ब्र० शिवम् आर्य ने वेदपाठ किया, प्राचार्य राजीव जी मुख्य अतिथि रहे। सभामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने घर पर जाकर आशीर्वाद प्रदान कर उद्‌बोधन दिया २ बच्चों का नामकरण संस्कार हुआ नरेश शास्त्री, राजकुमार आर्य ने सभा का अतिथ्य किया।

म० महेन्द्र पाल आर्य की शोक सभा

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ निकट गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ में, मा० महेन्द्र पाल आर्य के निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया पवित्र यज्ञशाला में यज्ञ का आयोजन हुआ तत्पश्चात् संस्था के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में शोक सभा की गई जिसमें आ० दिनेश शास्त्री, प्राचार्य राजीव, आ० सुधीर शास्त्री, आ० हर्ष देव ने अपने विचारों में उनके संस्मरण सुनाये अन्त में स्वामी जी ने उन्हें अच्छा शिक्षक, आदर्श आचार्य, तथा कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी की संज्ञा में देकर पिछले ४५ वर्षों की यात्रा में आये खट्‌टे–मीठे अनुभव सुनाकर अपनी श्रद्धांञ्जली दी उनके परिवार में जाकर भी उसमें हिस्सा लिया वहां प्रेमपाल शास्त्री प्राचार्य, निरंजन सिंह शास्त्री ने भी अपने विचार सुनाये आ० रवीन्द्र शास्त्री, आ० शिवकुमार शास्त्री, लोकेन्द्रा सिंह आचार्य के अलावा रवीन्द्र कुमार, राजपाल सिंह अटौला तथा परिवार के सभी सदस्यों ने भाग लिया। गुरूकुल ततारपुर में हिन्दी के आचार्य २ वर्ष पूर्व ही अवकाश प्राप्त हुए थे, अचानक बुखार के बाद पीलिया प्रभावी हुआ जीवन का हत्यारा बन गया दोनों गुरूकुलों के समस्त आचार्य छात्र एवं प्रबन्ध समिति के अधिकारी ओमदत्त आर्य प्रबन्धक, चौ० शीशपाल सिंह, अध्यक्ष ने भी भी शोक संवेदना व्यक्त की है आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष डॉ० धीरज सिंह ने भी के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की।

रणधीर कुमार शास्त्री
वेद प्रचार विभाग, मेरठ

शोक संवेदना

1. **आर्य समाज हाजीपुर बुलन्द शहर** के मंत्री ऋषि पाल आर्य के पिताश्री का अचानक देहावसान हो गया उनका शान्ति यज्ञ सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के निर्देशन में आचार्य प्रमोद कुमार शास्त्री एवं आचार्य प्रदीप कुमार शास्त्री गुरूकुल पूठ ने कराया बाद में शोक सभा में परिवार के धैर्य हेतु उपदेश स्वामी जी द्वारा हुआ उनकी सेवाओं को याद किया गया। पूर्व मन्त्री वासुदेव जी के सुपुत्र, श्री सुरेन्द्र जी स्याना के अलावा ग्राम एवं क्षेत्र के आर्य भारी संख्या में उपस्थित रहे। ओमदेव आर्य ने सभी का अतिथ्य किया।

2. **गुरूकुलपूठ के सहयोगी आर्य समाज सुलैला बुलन्द शहर** के उपप्रधान वीरेन्द्र सिंह आर्य हृदयाघात से अचानक युवावस्था में ही शरीरावसान हो गया। कर्मवीर सिंह आर्य आलम नगर के आप साले होते थे पूरे क्षेत्र में शोकाकुल वातावरण हो गया शान्ति यज्ञ हुआ सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने घर पर पहुँचकर शोक संवेदना व्यक्त का धैर्य प्रदान किया मा० अमरपाल सिंह, फकीरचन्द्र आर्य, प्रधान सूबेदार सहित पूरा ग्राम शोक सभा में सम्मिलित हुआ।

अनमोल है "माँ"

माँ है वंदन माँ है चंदन,
माँ से सपनों का संसार।
पूत कपूत भले ही हो जाए,
घटना नहीं माँ का प्यार।
माँ है धरती माँ है अम्बर,
सबसे ऊपर माँ का नम्बर।
माँ का दिल जो भी दुखाए,
पड़ती उस पर खुदा की मार।
माँ की ममता गंगा सी है,
माँ का गुस्सा कुश की आग।
क्षण में माँ मुस्का देती है,
भूल के दुनिया का हर राग।
माँ से दुनिया स्वर्ग सी लगे,
माँ से ही किस्मत भी जगे।
झंझट कितने भी आएं,
माँ ही कराती नौका पार।
हर रिश्ते में स्वार्थ छिपा है,
माँ की हर अदा में कृपा है।
माँ से है हर सांस सलामत,
माँ से जीवन का है सार।
माँ की सेवा ही पूजा है,
माँ सा नहीं सुख दूजा है।
माँ है तो हर फूल है प्यारा,
माँ नहीं तो पल पल है खार।
माँ है वंदन माँ है चंदन,
माँ से सपनों का संसार।
पूत कपूत भले हो जाए,
घटता नहीं माँ का प्यार।

•••

प्रेरक कहानी

–अदिति आर्य

गुरूकुल घरोंडा के एक आचार्य थे। वे जनसंघ के टिकट पर सांसद बन गए, तो उन्होंने सरकारी आवास नहीं लिया और बाजार सीताराम, दिल्ली ६ के आर्य समाज मंदिर से संसद तक पैदल जाया करते थे, कार्यवाही में भाग लेने। वे ऐसे पहले सांसद थे, जो हर सवाल पूछने से पहले संसद में एक वेद मंत्र बोला करते थे, वे सब वेदमंत्र संसद की कार्यवाही के रिकार्ड में देखे जा सकते हैं।

उन्होंने एक बार संसद का घेराव भी किया था, गोहत्या पर बंदी के लिए... एक बार इंदिरा जी ने किसी मीटिंग में उन्हें पांच सितारा होटल में बुलाया। वहां जब लंच चलने लगा तो उन्होंने अपनी जेब से लपेटी हुई बाजरे की सूखी दो रोटी निकाली और खाने लगे।

इंदिरा जी ने कहा आप क्या करते हैं, क्या यहां खाना नहीं मिलता। तो वे बोले मैं सन्यासी हूं, सुबह भिक्षा में किसी ने यही रोटियां दी थी, मैं सरकारी धन से रोटी भला कैसे खा सकता हूँ।

हाँ होटल में उन्होंने इंदिरा से एक गिलास पानी और एक अचार की फांक ली थी, जिसका भुगतान भी उन्होंने किया था। यह महान सांसद और संन्यासी कौन थे? ये सन्यासी स्वामी रामेश्वरानंद जी थे।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की जसवन्त नगर, इटावा में अन्तरंग बैठक की झलकियां

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।